mardi 13 mars 2012

HIN2B-09C

(Initiation à la littérature hindi moderne)

Cours-6

'सहमे हुए' - महीप सिंह

हाशमी के ठीक सामने हरजीत बैठता है । हरजीतके दायीं ओर लोबो और बायीं ओर शर्मा । वर्मा की जगह निश्चित नहीं है । कभी वह शर्मा के बायीं ओर बैठता है, कभी लोबो के दायीं ओर।

दफ़्तर की यह चौकड़ी नहीं पंचकड़ी है... जनाब इकबाल हाशमी, सरदार हरजीत सिंह, मिस्टर जान लोबो, पंडित रघुनाथ शर्लमा और श्री बी.आर. वर्मा पर... यह बी. आर. क्या हुआ? जब सभी के नाम पूरे-पूरे हैं तो वर्मा के "इनिशल" क्यों? पर यह भी सही है कि इसमें कोई कुछ नहीं कर सकता । वर्मा अपने आपको बी. आर. वर्मा ही कहलाना पसंद करता है।

जब पांचों व्यक्ति अपना-अपना लंच बाक्स खोल लेते हैं तो किसी न किसी बात को लेकर बहस शुरू हो जाती है । जान लोबो यह कहकर भी अपनी बात शुरू कर सकता है – "यार वर्मा, तुम न बीं. आर. हो, न वर्मा । तुम हो बुद्धराम कोरी। कोरी होने से तुम « शैड्यूल्ड कास्ट » में आ गए और आजकल शैड्यूल्ड कास्ट की तो चांदी ही चांदी है । पर यार तुम बी. आर. और वर्मा के पीछे अपनी असलियत कितने दिन छिपाते रहोगे । मेरी समझ में यह नहीं आता कि तुम खुलकर कहते क्यों नहीं कि मैं कोरी हूँ... ऐंड आय एम प्रोउड आफ़ इट..."

बस यूं समझिए कि लंच का पूरा वक़्त इसी चर्चा में निकल जाता है । वर्मा आर्यों और अनार्यों के संपूर्ण इतिहास को उन्हीं मिनटों में अपनी सब्ज़ी की कटोरी में समेट लेता है । वर्ण-व्यवस्था के नाम पर कुछ लोगों को अछूत बना दिए जाने की साजिश पर पूरा भाषण दे डालता है और कहता है – "मैं तो बी. आर. वर्मा ही लिखता हूँ । मेरा बेटा सीधे-सीधे अपने आपको ब्रह्म कुमार शर्मा लिखेगा।" यह कहकर रघुनाथ शर्मा की ओर मुड़ता है और मुस्कराता है ।

महफ़िल बर्खास्त होती है। हाशमी अपनी मेज़ का दराज़ से इलायची-सुपारी निकालकर सब को देता है और लोग अपनी-अपनी मेज़ों पर चले जाते हैं ।

इस पंचकड़ी में एक हिन्दू, एक मुसलमान, एक ईसाई, एक सिख और एक हरिजन होने का अर्थ नहीं है कि यह कोई देश की भावात्मक एकता बढ़ाने वाला दफ़्तर है । इसको एक संयोग मानना चाहिए ।

थह दफ़्तर किताबें प्रकाशित करने का एक बहुत बड़ा व्यावसायिक संस्थान है । इसका मुख्य कार्यालय बम्बई में है। उत्तर पश्चिमी भाग का कार्यालय दिल्ली में है । यह संस्थान अनेक भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करता है। हर भाषा के अपने अपने संपादक हैं । पंडित रघुनाथ शर्मा हिन्दी के, जनाब इकबाल हाशमी उर्दू के, सरदार हरजीत पंजाबी के और मिस्टर लोबो अंग्रेज़ी के संपादक हैं । पहले यह संस्था एक ब्रिटिश फ़र्म का अंग थी । अब इस पर पूरी तरह भारतीयों का अधिकार है । परन्तु ब्रिटिश लोगों ने जो परंपराएँ डाली थीं, उसे पूरी तरह निभाऐ जा रहे हैं । यह भी शायद उसी परंपरा का एक अंग है कि मालिक लोग समझते हैं कि संस्कृत-हिन्दी का काम कोई ब्राह्मण ही कर सकता है, उर्दू का काम कोई मुसलमान ही कर सकता है, पंजाबी के लिए एक सिख होना चाहिए और अंग्रेज़ी किसी शुद्ध हिन्दुस्तानी के बस का रोग नहीं । उसके लिए ब्रिटिश व्यक्ति होना चाहिए। वह न हो तो एंग्लो इंडियन हो । और वह भी न हो तो कम से कम क्रिश्चियन तो होना ही चाहिए।

एक परिवर्तन ज़रूर आया है। पहले हिन्दी का संपादक गाँठ लगी चोटी वाला, धोती-कुर्ताधारी त्रिपुंडयुक्त पंडित होता था । उसी तरह उर्दू का संपादक 'मौलवीनुमा' और पंजाबी वाला 'ज्ञनीनुमा' होता था । अब यह बात नहीं रही है । अब लोग काफ़ी उदार हो गए हैं। यह बात अलग कि शर्मा, हाशमी और लोबो की शक्ल देखकर उन्हें हिन्दू, मुसलमान और ईसाई बताया जा सकता है । हरजीत की बात ही अलग है । उसकी मेरून रंग की पगड़ी उसके 'खालसा' होने की घोषणा करती रहती है । परन्तु इसमें संदेह नहीं कि ये पांचों लोग उदार हैं । ...., वहाँ चाय-वाय पीते हैं । ये लोग नियमित रूप से हाशमी की मेज़ पर अपने-अपने लंच बाक्स खोलते हैं । यहाँ भी इनकी 'उदारता' कभी संकरी गलियों और कभी चौड़े पाट से होकर बहती है ।

यह स्थिति भी कम मज़ेदार नहीं । शर्मा दूसरों के लंच बाक्स में से अचार और सलाद – खीरा, गाजर, मूली, प्याज़ आदि ले लेता है। हाशमी के लंच बाक्स में अक्सर क़बाब होते हैं और हरजीत के लंच बाक्स में तली हुई कलेजियां। हाशमी हरजीत की कलेजियां खा लेता है और हरजीत हाशमी के क़बाब खा जाता है । यहाँ दोनों अपने-अपने धार्मिक आदेशों की कुछ अवहेलना कर जाते हैं क्योंकि हाशमी के क़बाब हलाल किए हुए बकरे के मांस से बने होते हैं और सिखों में हलाल खाना वर्जित है। इसी तरह हरजीत की कलेजियां झटका किए हुए बकरे की होती है, जिसे मुसलमान नहीं खा सकता। खान-पान की इस 'उदारता' के बावजूद हाशमी और हरजीत के मन को एक शंका अंदर-ही-अंदर घेरे रहती है । हरजीत हलाल के बकरे के क़बाब खाने में जितना उदार तो

हो गया है पर 'बीफ़' नहीं खा सकता । इसलिए वह कभी-कभी कह देता है - "यार हाशमी, तेरे क़बाब इतने लज़ीज़ होते हैं कि मैं उन्हें छोड़ नहीं सकता। पर कभी मुझे 'बीफ़' खिलाकर मेरा धर्म नष्ट न कर देना"

इस तरह हाशमी भी एक बात की ओर से पूरी तरह सतर्क है। वह हरजीत के लंच की कलेजी खा लेता है क्योंकि बकरे की कलेजी का स्वाद उसे हलाल या झटका किए जोने से नहीं बदलता। पर 'पोर्क' नहीं खा सकता। वह अक्सर कह देता है - "सुअर का मांस भी कोई इंसानों के खाने की चीज़ है... लाहौल विला कूवत..." (horreur !)

लोबो और वर्मा ने खाने-पीने में कभी हुज़्ज़त नहीं की । लोबो सब कुछ खा लेता है। वैसे उसका लंच बाक्स सिर्फ़ उसी का रहता है क्योंकि उसमें कभी टमाटर वाली, कभी चीज़ वाली और कभी-कभी हैम वाली सेंडविचेज़ होती हैं । वर्मा को दूसरों के लंच बाक्स से कुछ भी लेते संकोच होता है । वह अपने साथ सालाद खूब लाता है और उसे एक अखबारी कागज़ पर डालकर मेज़ के बीचों-बीच रख देता है । सब वहीं से लेकर खाते रहते हैं । हाशमी और हरजीत कभी-कभी अपने लंच बाक्स से क़बाब या कलेजी निकालकर उसके लंच बाक्स में डाल देते हैं ।

एक दिन हरजीत बोला – "यार हाशमी, आज फिर अखबार में यह खबर आई कि लखनऊ में शिया-सुन्नियों में झगड़ा हो गया है । मेरी समझ में यह नहीं आता कि शिया-सुन्नियों में आखिर झगड़ा किस बात का है ?"

खबर सुबह के ही अखबार में थी और सभी ने पढ़ी थी । इससे पहले भी इस पंचकड़ी में इस विषय पर कितनी ही बार चर्चा हो चुकी थी, क्योंकि साल में एक दो बार तो ऐसी खबर अखबारों में आती ही है । हाशमी ने कई बार इसकी पृष्ठभूमि भी बताई है, पर वह किसी को याद नहीं रहती । जब भी अखबार में यह खबर छपती है, यह बात नए सिरे से शुरू होती है ।

आज हाशमी ने जवाब नहीं दिया, बल्कि सवाल किया – "तुम यह बताओ कि यह अकालियों और निरंकारियों का झगड़ा क्या है ? इस झगड़े में कुछ ही अर्से में कितने लोग हलाल हो चुके हैं ।"

शर्मा, वर्मा, लोबो सभी हरजीत की ओर देखने लगे । इन दिनों अकाली-निरंकारी संघर्ष की खबरें अखबारों को घेरे हुए थीं । हरजीत ने कुछ बताना चाहा, पर असली समझ में नहीं आया कि इतनी देर में वह क्या बता दे । वह इतना ही बोला – "इस झगड़े की पृष्ठभूमि ज़रा लम्बी है । मैं किसी दिन विस्तार से बताऊंगा।"

शर्मा ऐसे विवादों में बहुत उत्साह से भाग नहीं लेता । वह लोगों की बातें सुनता है और अपनी सारी प्रतिक्रिया आंखों से, भौंहों से, चेहरे की रेखाओं से और गर्दन की आगे-पीछे या इधर-उधर हिलाने से ही व्यक्त करता है ।

वह बोला - "हरजीत ठीक कहता है । झगड़ों के बीज हमारी पृष्ठभूमि पता नहीं कब, किसने, क्यों बो दिय थे । इस बोई हुई फ़सल को हम कब से काट रहे हैं, काटते चले आ रहे हैं, काटते चले जाएँगे । मनष्य अवश्य लड़ेगा । वह अकेले अकेला लड़ता है तो लोग उसे झगड़ालू, गुंडा और बदमाश कहते हैं । वह झुंड बनाकर लड़ता है तो देशभक्त, धर्मवीर और गाज़ी कहलाता है, उसे सम्मानित किया जाता है । आखिर मनुष्य यह सम्मान क्यों न ले ।"

"जी हाँ, इसी सम्मान के लिए वह सामूहिक रूप से घृणा करता है - व्यक्ति से नहीं, बल्कि एक पूरे समूह से ... उसे गाँव में बसने नहीं देता, कुएँ से पानी नहीं भरने देता, मंदिर में नहीं जाने देता, उसकी छायामात्र पड़ जाने से यह अशुद्ध हो जाता है।" वर्मा प्रायः बात करते-करते उत्तेजित हो जाता है ।

इन दिनों के अखबार सांप्रदायिक दंगों की खबरें से भरे पड़े हैं । मुरादाबाद की ईदगाह में सुअर घुस गया था, वाराणसी के किसी मंदिर में गोमांस मिला था, इलाहाबाद की एक मस्जिद में सुअर का गोश्त पाया गया था ।

दिल्ली में भी छुट-पुट वारदातें हो गई हैं । हाशमी बल्लीमारान में रहता है । वहाँ करफ़्यू लगा हुआ है । हरजीत तुर्कमान गेट में रहता है । वहाँ भी करफ़्यू लगा हुआ है । लोबो और शर्मा ही दफ़्तर आ सके हैं । शर्मा कुछ दिन के लिए चंदौसी अपने भाई से मिलने गया । उस क्षेत्र में दंगा कुछ इस तरह भड़का हुआ है कि वहाँ से उसकी कोई खबर नहीं आ रही है । हरजीत कितने ही वर्षों से रोज़ शाम को किसी भी समय शीशगंज गुरुद्वारे में मत्था टेकने जाता है । सन सैंतालीस में जब उसके माँ-बाप, बड़े भाई-बहन गुजरांवाला से उजड़कर दिल्ली आए थे तो वह गर्भ में था । उसकी माँ कितने दहशत भरे दिन और कितनी डरावनजी रातों को अपनी कोख में समेटे हुए दिल्ली पहुंची थी । उसके परिवार ने कितने ही दिन इधर-उधर टकते हुए और शीशगंज में 'लंगर' खाते हुए गुज़ारे थे । बाद में उसके पिता ने तुर्कमान गेट में एक ऐसा मकान खरीद लिया था जिसका मुसलमान मालिक पाकिस्तान जाने की उतावली में उसे कौड़ियों के मोल बेच रहा था । तब से उसका परिवार उसी मकान में है । उस मकान का पूरा हुलिया ही बदल गया है । उसके पिता और भाइयों ने मिलकर धीरे-धीरे उसे एक अच्छी-खासी कोठी में बदल दिया है । परन्तु उस क्षेत्र में आज भी मुसलमानों की बहुतायत है । 'सरदार जी' परिवार की गली-मुहल्ले में बड़ी इज़्ज़त है । पर जब भी देश के किसी हिस्से से दंगे-फ़साद की खबर आती है, मन की किन्हीं तहों में बैठा हुआ डर उनके चारों ओर फैलने लगता है ।

हरजीत को आजकल कितना घूमकर गुरुद्वारे जाना पड़ता है । जब भी दंगों की खबर ज़ोर पकड़ती है, हरजीत अपनी बुशर्ट के नीचे छोटी कृपाण पहनना शुरू कर देता है ।

हाशमी इलाहाबाद का रहने वाला है । देश के विभाजन के समय उसकी उम्र तीन-चार वर्ष की थी । उसके कई नज़दीकी रिश्तेदार पाकिस्तान में रहते हैं जो विभाजन के समय उधर चले गए थे । इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उर्दू में एम.ए. करने के बाद वह नौकरी की तलाश में दिल्ली आया । वर्षों तक छोटी-मोटी उर्दू अखबारों से नौकरी करने के बाद उसे इस प्रकाशन संस्था

में अच्छी नौकरी मिली । वर्षों से वह बल्लीमारान की बदबूदार गलियों का गवाह बना दो कमरों के सीलनदार मकान में रहता है । कितनी ही बार उसका मन हुआ है कि वह भी दिल्ली की किसी आधुनिक कालोनी में एक फ़्लैट लेकर रहे, उसके बच्चे किसी अच्छे पब्लिक स्कूल में पढ़ें, उसकी बीवी इन गलियों की पान खातीं, फूहड़ बातें करतीं और टाट के पर्दों के पीछे ज़िन्दगी जीतीं औरतों से कुछ अलग होकर भी जीवन जिए । परन्तु वह इसी गली में जीवन जिए जा रहा है । यहाँ एक अजीब किस्म की वह सुरक्षा अनुभव करता है । उसे बार-बार लगता है – यदि ग्रीन पार्क, हौज़खास, साउथ एक्सटेंशन या लाजपतनगर जैसी किसी कालोनी में, जहाँ से उसका दफ़्तर बहुत नज़दीक है, मकान लेकर रहेगा तो उसके हिन्दू-सिख पड़ोसी कभी उससे खुलकर व्यवहार नहीं करेंगे, उनकी औरतें उसकी बीवी नसरीन से वैसा बहनापा नहीं बनाएँगी जैसा वे आपस में बना लेती हैं । और उनके बच्चे दूसरे बच्चों से हमेशा दूर-दूर रहेंगे । इन गलियों में बदबू तो है पर उन कालोनी में एक घुटन होगी जो उसे और उकसे परिवार को लगातार महसूस रहेगी ।

आज कई दिन बाद यह पंचकड़ी फिर जमी है । शर्मा चंदौसी से वापिस आ गया है । उसके चेहरे पर गहरा खिंचाव है । लोबो पूछता है, "क्या हाल है उस तरफ़ ?"

"हाल क्या होता है ।" शर्मा भर्राई आवाज़ में कहता है – "पाकिस्तान बन गया, पर पाकिस्तान ज़िंदाबाद के नारे अब भी उसी तरह लग रहे हैं जैसे अभी तक और पाकिस्तान बनना हो । मस्जिदें गोला-बारूद और चाकू-छुरों की भंडार बनी हुई हैं। पाकिस्तानी एजेन्ट सरेआम दंगे करवा रहे हैं । दुख की बात तो यह है कि पनाह उन्हें यहाँ के मुसलानों से मिल रही है । दंगाई खुलकर पुलिस और फ़ौज पर हमले कर रहे हैं और इसमें मशीनगनों और आटोमेटिक राइफ़लों का प्रयोग हो रहा है – यह हथियार इन्हें कहाँ से मिल रहे हैं ?"

शर्मा की बात से एक अजीब सन्नाटा सा छा जाता है । वर्मा, लोबो सभी कनखियों से हाशमी की ओर देखते हैं, जैसे जो कुछ शर्मा ने कहा है उसकी कुछ-न-कुछ ज़िम्मेदारी हाशमी के सिर पर भी है ।

हाशमी कुछ नहीं बोलता । चुपचाप खाना खाता रहता है ।

वर्मा कहता है - "यह भी कैसी अजीब बात है कि हरिजन सभी तरफ़ से पिटते हैं । माराठवाड़ा में सवर्ण हिन्दुओं के हाथों से पिट रहे हैं, क्योंकि अछूत हैं । मुरादाबाद में मुसलमानों ने हरिजन बस्तियां जला दी हैं, क्योंकि हम उनकी नज़र में हिन्दू हैं।"

लोबो कहता है - "तुम सब लोगों ने यह खबर तो पढ़ी ही होगी... आसाम में कुछ ईश्वर भक्तों ने एक पुलिस इन्सपेक्टर को पकड़कर इतना पीटा कि वह वहीं मर गया ।"

सभी लोबो की ओर देखने लगते हैं ।

"कैसी जहालत है ।" लोबो जैसे अपने आपसे कहता है - "एक मुसलमान पुलिस सब इन्सपेक्टर अपने एक हिन्दू साथी को ढूँढता हुआ मंदिर के अहाते में चला गया । वहाँ कुछ लोगों ने उसे पहचान लिया... अरे यह तो मुसलमान है ... और फिर इतना पीटा, इतना पीटा कि वह वहीं ढेर हो गया ।"

सभी शर्मा की ओर देखते हैं । जैसे वह मुसलमान सब इन्सपेक्टर क्यों मारा गया इसका पूरा स्पष्टीकरण शर्मा के पास है।

सभी खाना खत्म कर लेते हैं । आज शर्मा का लाया हुआ सलाद बच जाता है । शायद सभी ने उसमें से मूली या प्याज़ के टुकड़े नहीं उठाए थे । आज यह भी हुआ कि हाशमी ने अपने कबाब और हरजीत ने अपनी कलेजियाँ खुद ही खाईं ।

आजकल हाशमी और हरजीत कुछ ज़्यादा ही नज़दीक दिखाई देते हैं । तुर्कमान गेट और बल्लीमारान के इलाके भी पास-पास हैं । प्रायः शाम को दोनों साथ-साथ लौटते हैं । लालकिले पर बस से उतरकर दोनों चांदनीचौक की तरफ़ चल देते हैं । हरजीत गुरुद्वारे में मत्था टेकने के लिए रुक जाता है, हाशमी आगे चला जाता है । दोनों साथ-साथ रहते हैं तो एक-दूसरे का सहारा अनुभव करते हैं ।

हाशमी कहता है – 'किसी भी मुल्क में माइनारिटीज़ की ज़िन्दगी सहफ़ूज़ (= सुरक्षित) नहीं होती । पता नहीं कब मैजारिटी कम्युनिटी में किसी भी सबब से पागलपन सवार हो जाए और वह माइनारिटीज़ के पीछे हाथ धोकर पड़ जाए ।'

हरजीत इसी बात का समर्थन करता है, 'कम गिनती वाली कम्युनिटी के आदमी को तो एक अच्छी नौकरी भी नहीं मिलती । मुझे पता है इस नौकरी को पाने के लिए कितने धक्के खाने पड़े ।'

उस दिन लंच के बाद हाशमी ने हरजीत को अपने कमरे में बुलाया ।

'यार, हरजीत, तुम से एक मशवरा (= बातचीत, सलाह) करना है ।'

'बोलो ।' हरजीत ने देखा हाशमी कुछ घबराया हुआ है ।

'गाँव से वालिद (=पिता) साहब का खत आया है, अम्मा बहुत बीमार हैं... बस आखिरी वक़्त समझो । मरने से पहले वे मुझे एक नज़र देखना चाहती हैं । सोचता हूँ दो-चार दिन के लिए चला जाऊँ ।'

'हाँ, हाँ, हो आओ । इसमें इतना सोचने की क्या बात है । तुम्हारी छुट्टी तो बाक़ी होगी ।'

'छुट्टी तो कोई बात नहीं है, पर यार... चारों तरफ़ फ़साद फैले हुए हैं।' हाशमी कुछ सुकचाते हुए बोला।

'हाँ, फ़साद तो हैं। पर ऐसी चिंता की कोई बात नहीं है। आजकल हालात बेहतर है और अब तो दंगाग्रस्त इलाकों में फ़ौज तैनात है।' हरजीत बोला।

'हाँ, यह तो ठीक है।' हाशमी कुछ रुककर बोला – 'पर यह भी तो होता है कि लोग रास्ते में ट्रेन रोक लेते हैं और बस फिर काट-पीट शुरू कर देते हैं।'

हरजीत ने देखा, हाशमी के चेहरे पर पसीने की बूंदें झलक आई हैं।

'नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। इस बीच दंगाइयों ने कहीं ट्रेन रोककर काट-पीट की हो ऐसी कोई खबर भी नहीं है। कालका मेल से चले जाओ। गाड़ी सुबह चलती है। तुम दिन-दिन में ही इलाहाबाद पहुंच जाओगे।"

हरजीत की बात सुनकर हाशमी कुछ सोचने लगा। फिर बोला – 'इसमें एक और उलझन है। हमारा गाँव इलाहाबाद से तकरीबन बीस मील दूर है। वहाँ बस से जाना पड़ता है। इलाहाबाद की हालत तो तुम जानते हो। बस अड्डे तक पहंचते-पहुंचते किसी ने छुरा भोंक दिया तो अपन गए काम से।"

दोनों सोच में पड़ गए और फिर कितनी ही देर सोचते रहे। हाशमी गाँव नहीं गया। पंचकड़ी में उससे किसी ने नहीं पूछा कि उसकी माँ की हालत कैसी है। उसकी माँ सख्त बीमार है, यह बात सभी को पता थी, पर अब उसकी हालत कैसी है, यह पूछते जैसे सभी को अंदर-ही-अंदर डर लग रहा था।

लंच टाइम में खाना तो सबका साथ-साथ चल रहा है, जगह भी वही है, खाना भी पहले जैसा ही है, पर पता नहीं क्यों एक-दूसरे के लंच बाक्स से चीज़ लेना लगभग बंद सा हो गया। वर्मा अपना सलाद उसी तरह खाता है और कागज़ पर फैलाकर मेज़ के बीचों-बीच रख देता है। लोग बड़े अनमने ढंग से उसमें से एक आध टुकड़ा उठा लेते हैं। पर खाना सभी लोग अपने-अपने लंच बाक्स से ही खाते रहते हैं ... जैसे दूसरे के खाने में ज़हर मिला हुआ हो।

अब पहले जितनी बातचीत भी नहीं होती ... एक चुप्पी सी छायी रहती है। इस चुप्पी को प्रायः लोबो ही तोड़ता है – 'यार, हिन्दू-मुसलमानों के दंगों में हम ईसाइयों की बड़ी सुसीबत होती है। मुसलमान हमें हिन्दू समझकर छुरा भोंक देता है। और हिन्दू हमें मुसलमान समझकर हमारी गर्दन काट देता है। जब तक हम बताएँ – बताएँ कि हम क्या हैं, पेट चाक हो चुका होता है। हमें तो कुछ दिखाने का मौक़ा भी नहीं मिलता।'

इसकी इस बात से ऐसा ठहाका लगा कि पूरा कमरा गूंजने लगा।

पटना में होते हुए 'बुक फ़ेयर' की तारीख नज़दीक आ गई है। इस प्रकाशन संस्था ने उसमें अपने लिए काफ़ी बड़ी जगह ली है। वर्मा, चूंकि बिक्री विभाग में है इसलिए वह एक सप्ताह पहले वहाँ चला गया था। शर्मा, हाशमी, हरजीत, लोबो को भी वहाँ जाने का आदेश मिला है। अपरइंडिया एक्सप्रेस में फ़र्स्ट क्लास के डिब्बे में सभी की रिज़र्वेशन हो चुकी थी। चारों की बर्थ एक केबिन में है, इसलिए सभी सन्तुष्ट हैं ... रात को खूब मौज रहेगी। हरजीत ने सबसे कह दिया है – दोस्तों, घर से खाना खाकर मत आना, अपना-अपना साथ लाना। आठ बजकर दस मिनट पर गाड़ी छूटती है। गाज़ियाबाद के निकल जाने के बाद 'जश्ने जमहूरियत' शुरू करेंगे। बोतल लोबो लाएगा, सलाद मास्टर वर्मा साथ नहीं है, कोई बात नहीं, शर्मा जी सलाद आप लाएँगे। हाशमी, देख यार, कबाब काफ़ी होने चाहिए और हरजीत सिंह लाएगा कम से कम आधा किलो तली हुई कलेजी।'

आज के अखबार दंगे-फ़साद की खबरों से भर गए हैं। अलीगढ़ में चौबीस घंटे का करफ़्यू लगा दिया गया है। सारे शहर में सेना गश्त कर रही है। दंगाइयों ने कितने ही दुकान-मकान जलाकर खाक कर दिए हैं। कितनी लाशें जली हुई मकानों के मलबों के बीच से निकाली गई हैं। सासा शहर आतंक से डूबा हुआ है।

स्टेशन पर सब से पहले शर्मा पहुँच जाता है। कुछ देर में हाशमी पहुँचता है। दोनों अपने केबिन में आमने-सामने बैठे हैं। शर्मा कहता है – 'यह बुक फ़ेयर सफल नहीं होगा। वैसे ही कौन पुस्तकें खरीदता है। फिर आजकल तो आम आदमी ऐसे ही घर से निकलने से डरता है।'

हाशमी, सिगरेट सुलगाकर पीने लगता है। बैठे-बैठे बार-बार उसकी नज़र प्लेटफ़ार्म पर जाती है। आज ज़्यादा भीड़ नहीं है। वह आते-आते लोगों को देखता है और अनायास ही उनमें हिन्दू और मुसलमान चेहरे ढूँढने लगता है।

लोबो और हरजीत एक साथ आते हैं। चारों लोग आ गए हैं, इस बात पर सभी खुशी प्रकट करते हैं। लोबो कहता है – 'घर से स्टेशन तक आते-आते लगा जैसे मुझे सेल्यूट मारने के लिए जगह जगह सिपाही तैनात हैं। लाजपत नगर में कोई स्कूटर वाला इधर आने को तैयार ही नहीं होता था। सब कहते हैं – उधर करफ़्यू लगा हुआ है।'

गाड़ी चलने में अभी दस-पंद्रह मिनट बाकी हैं। हरजीत प्लेटफ़ार्म पर खड़ा है। प्लेटफ़ार्म पर रोशनी बहुत मद्धिम है और उमस बहुत ज़्यादा।

गार्ड की सीटी सुनाई देती है तो वह अपने केबिन में आकर हाशमी की बगल में बैठ जाता है। चारों चुप-चाप बैठे हैं। अलीगढ़ के दंगे की खबर आज की ताज़ा खबर है। शाम की अखबारों में खबर है कि आस-पास के ज़िलों में भी तनाव बढ़ गया है। शाम की अखबार दोनों खिड़कियों के बीच की टेबल पर रखी हुई है।

हरजीत कहता है – 'कल अलीगढ़ में दंगाई एक मकान में घुस गए। घर में उस समय एक बूढ़ा था ... सत्तर साल का और एक लड़की थी... आठ साल की। दंगाइयों ने दोनों को छुरों से गोद-गोदकर मार डाला। पिताजी बताते है कि सन् सैंतालीस के दंगों में दंगाई छोटे-छोटे बच्चों को नेज़ों की नाक पर उछाल देते थे .. क्या वही दिन फिर वापस आ रहे हैं ?

ऐसा लगा, सभी के चेहरों पर पसीने की बूंदें झलक आई हैं।

गाड़ी चल देती है। धीरे-धीरे वह प्लेटफ़ार्म से बाहर निकल आती है। यमुना पुल पर गाड़ी आती है तो हाशमी उठकर केबिन का दरवाज़ा बंद करके चिटकनी लगा देता है। फिर सभी लोग कुछ-न-कुछ पढ़ने में तल्लीन हो जाते हैं।

किसी ने केबिन चैक करता है और पूछता है, 'आप लोग बेड टी कहाँ लेंगे?'

'कानपुर में !' लोबो कहता है।

'नहीं !' हरजीत कहाता है, यह गाड़ी कानपुर तो सुबह चार बजे ही पहुँच जाती है ... चाय फ़तेपुर में भिजवाइएगा।'

'ठीक है साब।' कहकर कंडक्टर केबिन से बाहर निकल जाता है।

हाशमी उठता है और दरवाज़े की चिटकनी लगा देता है।

गाज़ियाबाद के प्लेटफ़ार्म को छोड़कर गाड़ी आगे बढ़ती है तो लोबो अपने बैग से बोतल निकालकर मेज़ पर रख देता है। कहता है – 'बड़ी मुश्किल से आज इसका इंतज़ाम हुआ। मुझे ख्याल ही नहीं था कि आज 'ड्राइ डे' है।'

शर्मा अपना टिफ़िन कैरियर खोलता है, जिसके ऊपर डिब्बे में कटा हुआ सलाद रखा है। हाशमी और हरजीत भी अपने-अपने डिब्बे खोलते हैं। लोबो बोतल खोलकर थोड़ी-थोड़ी व्हिस्की सबके गिलासों में डाल देता है। हरजीत वाटर बोतल से गिलासों में पानी डालता है।

सब गिलासों को टकराते हैं और पीने लगते हैं।

दो-तीन घूंट पीने के बाद शर्मा बोलता है – 'यार हाशमी, बुरा मत मानना। मुसलमान इस देश के प्रति कभी वफ़ादार नहीं हो सकता।'

हरजीत और लोबो को इस समय यह चर्चा अच्छी नहीं लगती। हाशमी शर्मा की बात सुनता है और चुप रहता है। फिर वह गिलास में बची हुई शराब को गले में उतार देता है और गिलास मेज़ पर रख देता है – 'शर्मा, एक बात मैं भी कहूँ ? यह देश क्या है ? नदियाँ ! पहाड़ ! ज़मीन ! नहीं, यह देश नहीं है। देश है यहाँ के बसने वाले लोग ... तुम... तुम जो अपने आपको हिन्दू कहते हो। हिन्दू के मन में हमारे लिए नफ़रत है और उनके दिल से नफ़रत नहीं जा सकती।'

लोबो गिलास फिर भर लेता है।

'देखो।'वह कहता है – 'शर्मा हाशमी से नफ़रत नहीं करता और न ही हाशमी कभी शर्मा के प्रति बेवफ़ाई करेगा। पर जब हम अपने मज़हबी माहौल में पहुँचते हैं तो हम बदलने लगते हैं। तब हरजीत पक्का अकाली बन जाता है और मुझे अपना कैथालिक होना याद आने लगता है।'

हरजीत एक घूँट में गिलास खत्म कर देता है – दोस्तो, मुझे लगता है सारी लड़ाई ताक़त और दौलत की लड़ाई है । आदमी सत्ता हथियाना चाहना चाहता है। इससे उसका अहं तुष्ट होता है। सत्ता के पीछे-पीछे दौलत आती है। अब इस लड़ाई को चाहे धर्म के नाम पर लड़ो, चाहे देश के नाम पर लड़ो, चाहे किसी चमकतदार वाद के नाम पर लड़ो... बस लड़ो ... लड़ो ... और लड़ते चले जाओ।'

बोतल आधी से ज़्यादा खत्म हो चुकी है। गाड़ी अपनी पूरी रफ़्तार से भागती चली जा रही है। लोबो ने बातचीत का रुख दूसरी तरफ़ मोड़ दिया है। अब बातचीत का केंद्र में प्रकाशन संस्था के मेनेजिंग डायरेक्टर मिस्टर रामानी आ गए हैं। लोबो ने अपने अनेक स्रोतों में प्राप्त उस जानकारी को फिर दुहरा दिया है कि मिस्टर रामानी पहले इस फ़ार्म में प्रूफ़रीडर के तौर पर भरती हुए थे। धीरे-धीरे वे अंग्रेज़ मालिकों के चहेते बनते गए। उसी ज़माने में वे कम्पनी के एक डायरेक्टर बन गए। जब अंग्रेज़ों ने उसे छोड़ने का फ़ैसला किया तो सब कुछ मिस्टर रामानी के पास आ गया। आज मिस्टर रामानी लाखों में खेल रहे हैं।

mardi 13 mars 2012

अलीगढ़ से पहले सभी ने खा लिया है। यहाँ तक किसी ने सोने की बात नहीं कही है। सभी के मन में था कि पहले अलीगढ़ निकल जाए।

अलीगढ़ स्टेशन पर लगभग सन्नाटा-सा छाया हुआ है। शर्मा ने खिड़कियों के शीशे नीचे गिरा दिये हैं। चारों लोग शीशे से ही बाहर झाँकने की कोशिश कर रहे हैं। इक्का-दुक्का चाय वाला आवाज़ लगाता हुआ घूम रहा है। पुलिस के दो-चार सिपाहियों के बूटों की आवाज़ उस सन्नाटे में बज-सी रही है।

गाड़ी अलीगढ़ स्टेशन छोड़ती है तो सभी राहत की साँस लेते हैं। सभी अपने अपने बिस्तर लगाने लगते हैं। शर्मा और हाशमी नीचे की बर्थों पर हैं और लोबो और हरजीत ऊपर की बर्थों पर। सोने से पहले शर्मा उठकर केबिन के दरवाज़े की चिटकनी और लैच को अच्छी तरह देख लेता है और हल्की नीली रोशनी छोड़कर बाकी बत्तियाँ बुझा देता है।

लोबो के खर्राटों की आवाज़ सबसे पहले आती है। फिर हरजीत की नाक भी हल्की-हल्की बजने लगती है।शर्मा और हाशमी एक दूसरे की ओर पीठ किए सोने की कोशिश करने लगते हैं। उन्हें भी नींद का पहला झोंका आ गया है।

तभी शर्मा की आवाज़ सुनाई देती है – 'हाशमी ... हाशमी...।'

हाशमी एकदम चोंककर उठता है – 'क्या है... क्या है ?'

'गाड़ी रुकी है।' शर्मा खिड़की से कुछ देखने की कोशिश करता है।

हाशमी झटपट उठकर बत्ती जलाने के लिए स्विच आन करता है। पर बत्ती नहीं जलती ? वह अनुभव करता है कि केबिन के पंखे भी बंद है और उमस बढ़ गई है। लोबो और हरजीत की नींद भी गर्मी के कारण टूट जाती है।

लोबो लेटे-लेटे ही कहता है – 'शर्मा, गाड़ी रुकी हुई है क्या ?'

हरजीत कहता है – 'अरे हाशमी, लाइट आन कर दो।'

'लाइट गाइब है।' हाशमी और शर्मा के मुँह से एक साथ निकलता है।

लोबो और हरजीत नीचे उतर आते हैं।

गाड़ी खड़ी है। चारों ओर घुप अंधेरा है। आकाश में एक भी तारा टिमटिमाता हआ नज़र नहीं आ रहा है।

हाशमी अपने पास बैठे हरजीत को कंधे से हिलाते हुए कहता है – 'तुम्हें कुछ शोर नहीं सुनाई दे रहा है ?'

सभी ध्यान लगाकर सुनने लगते हैं। आंखें फाड़-फाड़कर दूर अंधेरे में कुछ देखने की कोशिश कर रहे हैं। शर्मा लोहे की सरियों की खिड़की से इंजन की ओर देखने की कोशिश कर रहा है। पर अंधेरे में आगे के डिब्बों की खामोश कतार के अलावा और कुछ नहीं दिखाई देना।

'यार, बाहर निकलकर पता तो लगाएँ कि आखिर बात क्या है।' हरजीत कहता है।

'ज़रा कंडक्टर से ही पूछ कर देखें।' लोबो कहता है।

'चुपचाप बैठे रहो।' शर्मा कड़ककर कहता है।

सभी को लगता है, शोर बढ़ता जा रहा है और पास-पास आता जा रहा है।

तभी एक बहुत ज़ोर का धमाका होता है। कोई भारी और सख्त चीज़ शर्मा की खिड़की से लगे सरियों से टकराती है और नीचे गिर जाती है। एक चीख और दहशत सारी केबिन में भर जाती है। शर्मा और हाशमी जल्दी-जल्दी अपनी खिड़कियों के शटर और शीशे नीचे गिरा देते हैं। केबिन में घुप अंधेरा छा जाता है।

सभी को एक-दूसरे की साँसों की आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही है।

केबिन चारों तरफ़ से बंद है, फिर भी ऐसा लग रहा है जैसे बेहिसाब शोर फैला हुआ है। पसीने से तरबतर और सहमे हुए आठ हाथ आपस में एक-दूसरे को पलोसते चले जा रहे हैं।

१९८०

साजिश f., conspiration, कार्यालय, m. bureau administratif, siège, महफ़िल f., assemblée, réunion, बर्खास्त clos, terminé, प्रमाण m., preuve, संपादक m., éditeur, दराज़ m., tiroir, सम्मान m. honneur, दंगाm, फ़साद m. émeute, ईदगाह sanctuaire musulman, संप्रदाय m. communauté religieuse, वारदात f.(= घटना f.), भड़कना s'enflammer , मत्था टेकना se prosterner, दहशत terreur, नारा m. slogan, पनाह = शरण m refuge, कनखी f. coin de l'œil, भौंकना poignarder